Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part – II (Hons)
Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

1.

Notes / "Spinoza's Conception of Substance"
(स्पिनोजा : द्रव्य विचार)

स्पिनोजा भी देकार्त की तरह एक बुद्धिवादी दार्शनिक थे। इनके दर्शन का आधार देकार्त के कुछ मूल विचार हैं जिनको स्पीनोजा ने सुधारा, संवारा, बढ़ाया और अपनाया। द्रव्य, गुण और पर्याय – ये तीन स्पीनोजा के दर्शन के आधार स्तम्भ हैं।

"द्रव्य वह है जिसकी स्वतन्त्र सत्ता हो और जिसके ज्ञान के लिए किसी अन्य पदार्थ के ज्ञान की अपेक्षा न हो।" इस स्वतन्त्र अपरिमित और अद्वितीय द्रव्य को स्पीनोजा ने ईश्वर के नाम से निर्दिष्ट किया है। ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है वह एक अद्वैत, परम स्वतंत्र सबका कारण होते हुए भी स्वयं अकारण स्वयंभू और स्वतः सिद्ध है।

स्पीनोजा के द्रव्य की परिभाषा का विश्लेषण करने से इसके लक्षण स्पष्ट होते हैं —

1. द्रव्य स्वतन्त्र है। वह अपनी सत्ता या अपने ज्ञान के लिए किसी पर निर्भर नहीं है। द्रव्य सबका आधार होते हुए भी स्वयं निराधार है।
2. द्रव्य निरपेक्ष है। उसे अपनी सत्ता या अपने ज्ञान के लिए किसी की अपेक्षा नहीं है। अकारण होने से द्रव्य निरपेक्ष है।

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB
BOOKS

Notes

3. द्रव्य एक असीम शाश्वत तथा स्वयंभू है और इसलिए वह सभी कालों से परे है। द्रव्य को एक से अधिक मानने से उसकी सत्ता सीमित होगी। अत: द्रव्य को स्वतंत्र मानने के लिए उसे अद्वितीय स्वीकारणा आवश्यक है।

4. द्रव्य अपरिच्छिन्न तथा अपरिमित है। सार्वभौम एक तथा परम स्वतंत्र होने से द्रव्य की सत्ता किसी अन्य पर आश्रित नहीं। एक होने से वह असीम है।

5. द्रव्य स्वत: सिद्ध है। कहने का तात्पर्य यह है कि द्रव्य-ज्ञान का आधार द्रव्य ही है। द्रव्य ज्ञान में किसी अन्य ज्ञान की अपेक्षा नहीं, अर्थात द्रव्य स्वयं अपना प्रमाण है। स्वसंवेद्य है।

6. स्पीनोजा के अनुसार विशिष्ट वस्तुओं का अपना कोई अस्तित्व नहीं है, परन्तु सभी वस्तुओं का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। परन्तु सभी वस्तुओं का योगफल ईश्वर है। जैसे यदि हम आलेख पत्र को ले तो उसमें अनेक्य छोटे-छोटे वर्ग रहते हैं। परन्तु इन सबों कोसत्ता तो वह देता है जो आलेख पत्र में है। इसीप्रकार से वस्तुओं की अपनी कोई सत्ता नहीं और यदि कोई सत्ता है तो वह एकमात्र द्रव्य है जो उनका मूल हेतु है।
इस दृष्टि से ईश्वर
Natura Naturata

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes /

GRB BOOKS

या, प्रकृति रचयिता कहा है। अतः विश्व को या तो निष्क्रिय या स्थावर रूप में देखा जा सकता है या सक्रिय विकासात्मक रूप में देखा जा सकता है। दोनों ही दशा में विश्व है या नहीं ईश्वर इसके स्थान पर ईश्वर की ही सत्ता है।

किसी भी गुण को 8. स्पीनोजीय द्रव्य में आरोपित नहीं किया जा सकता है। द्रव्य सीमित एवं परिच्छेदित होता है। इस सन्दर्भ में स्पीनोजा की प्रसिद्ध उक्ति है — Every determination is negation यह द्रव्य को निर्गुण तथा निराकार बना देता है।

स्पीनोजा का द्रव्य उपनिषद के ब्रह्म के समान निर्गुण तथा निराकार है। उन्होंने द्रव्य को दो स्वरूप माना है। पहला स्वरूप निर्गुण है। इसके अनुसार द्रव्य मन और वाणी से परे एक अद्वैतीय रूप है। यह स्वरूप उपनिषद के निर्गुण ब्रह्म के समान है। इसी द्रव्य का स्वरूप लक्षण कहा जाता है। द्रव्य का दूसरा रूप सगुण है स्पीनोजा का द्रव्य स्वयं निराधार होते हुए भी सृष्टि का आधार है। तात्पर्य यह है कि द्रव्य ही सृष्टिकर्ता भी है।

देकार्त ने भी द्रव्य की परिभाषा स्पीनोजीय द्रव्य के समान ही दी थी, किन्तु देकार्त और स्पीनोजा दोनों की परिभाषा में तार्किकता का अन्तर है। देकार्त के अनुसार द्रव्य दो प्रकार का है

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB
BOOKS

Notes

स्वतंत्र तथा परतंत्र प्रत्य है तथा चित और अचित गुण में देकार्त के द्रव्य विचार को स्पीनोजा दोषपूर्ण कहता है। देकार्त द्रव्य को स्वतन्त्र मानते है और परतंत्र द्रव्य की सत्ता मान लेते है। यदि द्रव्य स्वतन्त्र है तो चित - अचित द्रव्य नहीं कहे जा सकते। स्पीनोजा के अनुसार द्रव्य की संख्या एक से अधिक नहीं हो सकती। एक से अधिक द्रव्य की संख्या स्वीकार करना तो द्रव्य की स्वतन्त्रता का निषेध करना है। तात्पर्य यह है कि यदि द्रव्य स्वतन्त्र है तो वह निश्चित ही एक होगा। इसप्रकार चित, अचित ईश्वर परतन्त्र है। उनकी स्वतन्त्र सत्ता नहीं अतः वे द्रव्य नहीं है।

चित और अचित तो स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य का गुण है। स्पिनोजा ने देकार्त के द्रव्य सम्बन्धी विचार को और संशोधित रूप में प्रस्तुत किया है। इस कारण देकार्त का द्वैतवाद स्पिनोजा के अद्वैतवाद में परिणत हो जाता है।

देकार्त के ईश्वर एवं स्पिनोजा के ईश्वर में अन्तर यह है कि देकार्त का ईश्वर विश्वातीत है तो स्पिनोजा का ईश्वर विश्वव्यापी है। पहला ईश्वरवादी है तो दूसरा सर्वेश्वरवादी है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य या ईश्वर के रूपान्तर को 'प्रकार' कहा जाता है। या 'प्रकार' वह है जो अन्य वस्तुओं में है अथवा अन्य वस्तुओं के द्वारा सोचा जा सके।

'प्रकार' की अपनी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है उनका सम्बन्ध द्रव्य से उसी तरह का है जिस तरह से तरंगों का सम्बन्ध समुद्र से है। बिना तरंगों का समुद्र हो सकता है। परन्तु असीमित रूप में शुद्ध चेतना में कोई विकार नहीं आती है।

विस्तार के असीमित प्रकार को गति विश्राम कहा गया है। अर्थात बाह्य भौतिक जगत यद्यपि क्षणिक वस्तुओं का धाम है फिर भी यह सभी वस्तुओं के सामान्य धर्म के रूप में या उसके योगफल के रूप में शाश्वत है। यदि हम विशिष्ट वस्तुओं को लें तो उसकी तह में अणु है और अणुओं की तह में केवल वह असीम विस्तार का रूप है जिसे गति - विश्राम कहा जा सकता है। अतः विस्तार को स्पीनोजा ने वैसा नहीं समझा है जैसा देकार्त ने उसे समझा था।

स्पिनोजा के गति विश्राम का अर्थ यांत्रिक नियमों से लगाया गया है अतः स्पिनोजा के अनुसार भौतिक जगत का शाश्वत रूप इसके यांत्रिक नियम है। परन्तु ये वस्तुएं जिनमें यह लागू होता है वे केवल सीमित प्रकार है जिनकी अपनी कोई सत्ता

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

नहीं है। फिर चूंकि गति-विराम या यांत्रिक नियमों की सत्ता असीम प्रकार की सत्ता है बल्कि असीम द्रव्य की इसलिए यान्त्रिक नियम बिना काल के माने सत्य नहीं हो सकते हैं। अतः स्पिनोजा के अनुसार काल की सत्यता इसी भौतिक जगत के लिए है। परन्तु परम द्रव्य में उसकी सत्यता संभव नहीं है इसलिए विस्तार के असीम प्रकार के सिद्धान्त में यान्त्रिक भौतिकवाद तथा वेदान्त की व्यावहारिक सत्ता की झलक भी आती है क्यों कि वेदान्तीय व्यावहारिक जगत में भी काल को सत्य माना जाता है।

उपर्युक्त विवेचन पर ध्यान देने से पता चलता है कि सीमित प्रकार या विशिष्ट वस्तुएँ असीमित प्रकार में विलीन हो जाती है और अन्त में असीमित प्रकार भी द्रव्य या ईश्वर की सत्ता में अन्तर्निहित हो जाती है। ईश्वर की ही शुद्ध सत्ता रह जाती है। अतः स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर को छोड़कर सभी मिथ्या हो जाता है। इसीसे हेगल ने स्पिनोजा की आलोचना करते हुए कहा है कि स्पिनोजीय ईश्वर सिंह की वह मांद है जिसमें सभी वस्तुएँ तिरोहित हो जाती हैं और उसमें से कोई भी यथार्थ रूप में होकर नहीं निकलती नजर आती है।

चूंकी स्पिनोजा के अनुसार सभी वस्तुओं में केवल एक ईश्वर

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

की ही सत्ता सत्य है इसलिए इन्हें सर्वेश्वरवादी कहा गया है। ~~के इस~~ एकात्म स्पिनोजीय सर्वेश्वरवाद में उस एकात्मक सत्ता की स्थापना की गयी है जिसमें विशिष्ट वस्तुओं की सत्यता तिरोहित हो जाती, इसलिए इसे असन्तोषजनक शून्यात्मक एकता कहा जाता है इसे हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि स्पिनोजा में सम्पूर्ण एकता न होकर आंशिक एकता है इसमें लम्बवर्णी एकता है, पर क्षैतिज एकता नहीं है।

स्पिनोजा के दर्शन में सीमित प्रकार, असीमित प्रकार गुण के बाद द्रव्य की सत्ता है।

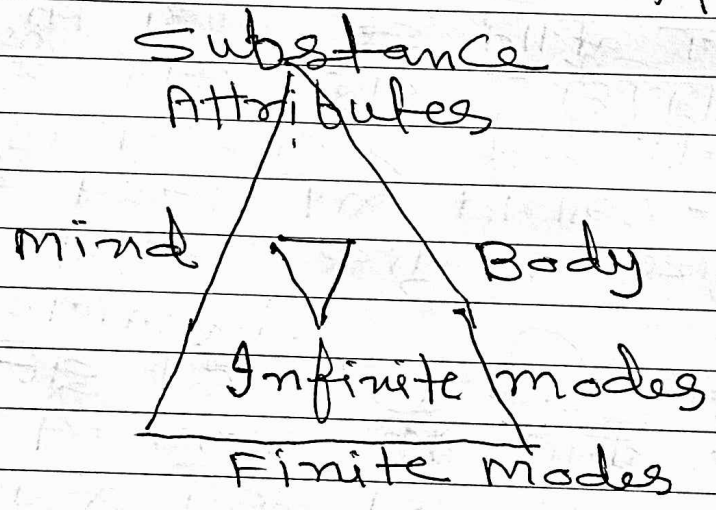

व्यावहारिक जीवन का वस्तुएं आधार या क्षितिज की दिशा में है और जैसे-जैसे हम ऊर्ध्वगामी होते हैं वैसे वैसे व्यावहारिक वस्तुओं की क्षीणता हो जाती है और द्रव्य तक पहुँचकर तिरोहित हो जाती है।

अतः द्रव्य का प्रकार से यही सम्बन्ध है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

की ही सत्ता सत्य है इसलिए इन्हें सर्वेश्वरवादी कहा गया है। स्पिनोजीय सर्वेश्वरवाद में उस एकात्मक सत्ता की स्थापना की गयी है जिससे विशिष्ट वस्तुओं की सत्यता तिरोहित हो जाती, इसलिए इसे असन्तोषजनात्मक शून्यात्मक एकता कहा जाता है इसे हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि स्पिनोजा में सम्पूर्ण एकता न होकर आंशिक एकता है, इसमें लम्बवत् एकता है, पर क्षैतिज एकता नहीं है।

स्पिनोजा के दर्शन में सीमित प्रकार, असीमित प्रकार गुण के बाद द्रव्य की सत्ता है।

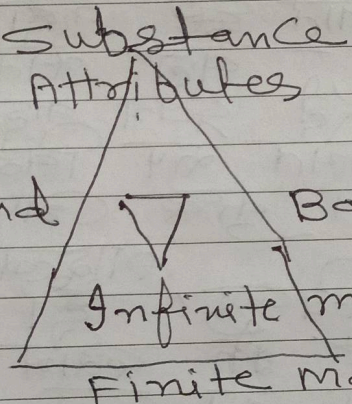

व्यावहारिक जीवन का वस्तुएँ आधार या क्षितिज की दिशा में है और जैसे-जैसे हम ऊर्ध्वगामी होते हैं वैसे-वैसे व्यावहारिक वस्तुओं की क्षीणता हो जाती है और द्रव्य तक पहुँचकर तिरोहित हो जाती है। अतः द्रव्य का प्रकार से यही सम्बन्ध है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS